11

''आई ऑब्जेक्ट !''

(3:1-8)

यह पाठ उद्धार के लिए यहूदियों की आवश्यकता पर केन्द्रित भाग को संक्षिप्त करता है।[1] इस तथ्य को स्थापित करने के लिए प्रेरित की चर्चा कि अन्यजातियां खोई हुई थीं, आधे अध्याय यानी पन्द्रह आयतों में है (1:18-32)। यहूदियों को उसका दोषी ठहराना दोगुने से भी अधिक यानी एक और तिहाई अध्यायों, सैंतीस आयतों में है (2:1-3:8)। यह अन्तर क्यों है? शायद इसलिए क्योंकि यहूदियों के लिए यह मानना दोगुना कठिन होना था कि वे पापी हैं।

इस पाठ के लिए वचन 3:1-8 है। यह वचन आसान नहीं है। डग्लस मू ने 3 से 8 आयतों को ''पूरे पत्र की सबसे कठिन आयतों में से कुछ'' बताया है।[2] अधिकतर लेखक इस बात से सहमत हैं कि पौलुस ने वार्तालाप के ढंग का इस्तेमाल किया, जिसमें उसने काल्पनिक यहूदी विरोधी की आपत्तियों का उत्तर दिया। परन्तु यह हमेशा स्पष्ट नहीं है कि कौन ''बोल रहा'' है, यानी पौलुस बोल रहा है या उसका विरोधी। इसके अलावा आपत्तियां और उनके उत्तर बहुत ही संक्षिप्त हैं, जिसके लिए कही गई संक्षिप्त बातों का कुछ अनुमान लगाना आवश्यक है। तौभी प्रेरित का मुख्य उद्देश्य स्पष्ट है: यहूदी विरोध को शांत करना (देखें 2:1; 3:19)।

आपत्तियों पर, सम्भवतया वे दुअर्थी होंगी जिन्हें पौलुस ने यहूदी आराधनालयों में प्रचार करते सुना (देखें प्रेरितों 13:14; 14:1; 17:1, 10; 18:4; 19:8)। जब मैंने पूर्णकालिक प्रचार करना आरम्भ किया था तो मुझे बार-बार उन्हीं प्रश्नों और तर्कों को सुनना अजीब लगता था। मैं अपने आप से कहता था, ''मुझे इनके उत्तर कार्डों पर छपवाकर रख लेने चाहिए ताकि जब कोई यह प्रश्न पूछे तो मैं वह कार्ड निकालकर दे दूं इससे हम दोनों का बहुत सा समय बच सकता है!'' यह मेरा अपने साथ निजी मज़ाक था परन्तु यदि आप बहुत समय से सिखा या पढ़ा रहे हैं तो आपको मालूम होगा है कि इसका क्या अर्थ है। वर्षों से पौलुस ने बार-बार वही आपत्तियां सुनी होंगी। वे उन आलोचनाओं की तरह ही होंगी जो मसीही बनने से पहले वह स्वयं करता रहा था।

ऑब्जेक्शन: ''पौलुस, तू परमेश्वर की वाचा की उपेक्षा कर रहा है!''[3] (3:1, 2)

आपत्ति (3:1)

अध्याय 2 के अन्त में पौलुस ने यहूदियों को बताया कि मूसा की व्यवस्था होना और खतना किए होने से उद्धार का मिलना पक्का नहीं है (2:17-29)। जब भी आप किसी धार्मिक व्यक्ति से कहें कि उसके उद्धार पर संदेह है तो आपको उसकी ओर से तर्क ही मिलेगा। इस कारण यह ''उत्तर'' सुनकर हमें आश्चर्य नहीं होता: ''अत: यहूदी की क्या बड़ाई और खतने का क्या लाभ?''

(3:1)।

''बड़ाई'' का अनुवाद *perissos* से किया गया है, जो ''पर'' के लिए उपसर्ग, *peri* से निकला है। *Perissos* का इस्तेमाल उसके लिए किया जाता है, जो ''ऊपर और ऊंचा'' है।[4] ''लाभ,'' बढ़ना के मूल अर्थ वाले *opheleia* शब्द से लिया गया है।[5] *Opheleia* का इस्तेमाल उसके लिए किया जाता है जो उसमें जो किसी के पास है बढ़ाता या जोड़ता है। *Perissos* और *opheleia* एक ही बात को कहने के दो ढंग हैं। पौलुस का काल्पनिक यहूदी विरोधी पूछ रहा था, ''यदि जो तू कहता है वह सत्य है, तो यहूदी होने का *क्या अर्थ है?*''

जहां तक यहूदियों की बात थी अध्याय 2 में बहुत पहले उनके साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा को दिखाते शब्द थे। परमेश्वर ने उन्हें संसार की सब जातियों से अलग किया था और उन्हें व्यवस्था और खतने का चिह्न दिया था। क्या पौलुस यह कह रहा था कि इन सब का कोई अर्थ नहीं है?

उत्तर (3:2)

अध्याय 2 में पौलुस के कड़े शब्दों के बाद हमें उसे उत्तर देने की उम्मीद होगी कि, ''यहूदी होने का कोई लाभ *नहीं* है।'' इसके विपरीत उसने उत्तर दिया, ''हर प्रकार से बहुत कुछ'' (3:2क)। पौलुस के मन में ''बहुत'' सी बड़ाइयां और लाभ कौन से थे? उसने कहा, ''सबसे पहले तो यह कि परमेश्वर के वचन उन को सौंपे गए'' (आयत 2ख)।

''सबसे पहले तो'' यह प्रभाव छोड़ता है कि पौलुस एक विस्तृत सूची देना चाहता था परन्तु अध्याय 9 से पहले यह सूची दिखाई नहीं देती (देखें आयतें 4, 5)। यहां दिए गए शब्द सम्भवतया केवल परिचायक हैं (देखें RSV), जिसका अर्थ है ''सबसे महत्वपूर्ण [लाभ] है'' (देखें KJV)।

यहूदियों को सबसे बड़ा लाभ यह मिला था कि उन्हें ''परमेश्वर के वचन'' सौंपे गए थे। ''वचन'' का अनुवाद *logia* से किया गया है जिसे अधिकतर विद्वान *logos* (''वचन'') का छोटा रूप मानते हैं।[6] AB में ''परमेश्वर के वचन'' को ''परमेश्वर के'' (संक्षिप्त ... बोल) कहा गया है। शायद इस विलक्षण रूप का इस्तेमाल परमेश्वर के प्रकाशन के निकट और व्यक्तिगत स्वभाव के संकेत के लिए किया गया था। NIV में ''the very words of God'' है। कई लोग logia को यहूदी धर्मशास्त्र के एक भाग तक ही सीमित करते हैं, परन्तु जॉन मैकआर्थर सम्भवतया सही था जब उसने यह निष्कर्ष निकाला कि यह शब्द ''सम्पूर्ण पुराने नियम'' के लिए है।[7]

जेम्स आर. एडवर्ड ने लिखा है, ''परमेश्वर का प्रकाशन यूं ही हर जगह नहीं हो जाता। मनुष्यजाति परमेश्वर को जब चाहे जहां चाहे बुला नहीं सकती। परमेश्वर को ही अपने आप को बताना होगा।''[8] इस मामले में उसने यहूदियों पर अपने आप को अपनी इच्छा को बताया। उन्हें परमेश्वर के वचनों, भविष्यवाणियों और प्रतिज्ञाओं से आशीष दी गई थी। उसके वचन उन्हें बताते थे कि कैसे जीना है; उसकी भविष्यवाणियां मसीहा की ओर ध्यान दिलाती थीं; उसकी प्रतिज्ञाएं उन्हें निरन्तर रक्षा का आश्वासन देती थीं। परमेश्वर ने यहूदी जाति को ''अन्य सभी खज़ानों से बढ़कर खज़ाने का ज़िम्मा'' दिया था।[9]

क्या लिखित में इस खज़ाने के होने ... स्वयं परमेश्वर के स्पष्ट प्रकाशन के होने ... मनुष्यजाति से परमेश्वर की अपेक्षा के संक्षिप्त निर्देशों के होने से कुछ लाभ था? दो लोगों के अंधेरे

में रास्ता ढूंढ़ने की कोशिश करने की कल्पना करें। एक के पास मद्धम सी, टिमटिमाती लौ है, जबकि दूसरे के पास तेज़, शक्तिशाली रौशनी है, जो उसके रास्ते को रौशन कर देती है।[10] पहले व्यक्ति की तुलना मसीह के आने से पहले अन्यजातियों से, जबकि व्यक्ति की तुलना यहूदी लोगों से की जा सकती है। फ़ायदे में कौन था? स्पष्टतया जिसके पास तेज़ रौशनी थी। यहूदी ही था जिसके पास ''परमेश्वर के वचन'' थे।

परन्तु कोई बड़ाई होने का अर्थ सफलता की गारंटी नहीं होता। कोई व्यक्ति जिसके पास अच्छी शिक्षा है अनपढ़ व्यक्ति से अधिक फ़ायदे में है। तौभी इतनी शिक्षा होने के बावजूद यदि कोई दूसरा थोड़ी सी या औपचारिक शिक्षा से कठिन परिश्रम के कारण आगे बढ़ जाता है, तो अधिक शिक्षा वाले का क्या लाभ। खेलों में मज़बूत शरीर और स्वाभाविक खेल योग्यता वाला व्यक्ति कम योग्यता वाले व्यक्ति से अधिक फायदे में हैं परन्तु कई बार दृढ़ निश्चय के कारण कमज़ोर व्यक्ति आगे बढ़ जाता है। इसी प्रकार यहूदी लोगों के पास परमेश्वर के वचन होना उन्हें अन्यजातियों से बहुत अलग कर देता था, परन्तु यहूदी लोग परमेश्वर द्वारा उन्हें दिए गए लाभों का फायदा नहीं उठा पाए।

स्पष्टतया यहूदी लोग यह समझने में नाकाम रहे कि उन्हें ''परमेश्वर के वचन सौंपे गए'' थे। अनुवादित शब्द ''सौंपे गए'' का मूल *pisteuo* है, जो ''विश्वास'' के लिए सामान्य शब्द है। (इस पर हम थोड़ी देर में वापस आएंगे।) कर्मवाच्य रूप में इस्तेमाल करने पर इस शब्द का अर्थ ''ज़िम्मेदारी सौंपना'' हो जाता है।[11] ''सौंपे गए'' शब्द में ''ज़ोर स्वामित्व से भण्डारीपन, व्यवस्था के अधिकार से इसकी जिम्मेदारी पर हो जाता है।''[12] यहूदी लोग वचन के अच्छे भण्डारी *नहीं* थे। एक बात में उन्होंने वास्तव में इसे घुमा दिया था (देखें 2 इतिहास 34:14-33)। मसीह के समय तक वे परमेश्वर द्वारा दी गई आज्ञाओं से अधिक महत्व मनुष्य की परम्पराओं को देने लगे थे (देखें मत्ती 15:1-9)। यीशु ने यहूदी अगुओं के एक समूह को बड़ी कठोरता से कहा था, ''तुम पवित्र शास्त्र को समझते नहीं हो'' (मरकुस 12:24)।

ऑब्जेक्शन: ''पौलुस, तू परमेश्वर की वफ़ादारी पर शक कर रहा है!'' (3:3, 4)

आपत्ति (3:3)

यह तथ्य कि यहूदी लोग व्यवस्था को मानने में असफल रहे थे, हमें दूसरी आपत्ति तक ले आता है। ''यदि कितने अविश्वासी निकले भी तो क्या हुआ। क्या उनके विश्वासघाती होने से परमेश्वर की सच्चाई व्यर्थ[13] रहेगी?'' (आयत 3ख)।

2 और 3 आयतों में पौलुस का शब्दों पर खेल हिन्दी के बजाय यूनानी में अधिक स्पष्ट है। ''विश्वास'' के लिए शब्दों का दोहराव है (*pisteuo* और *pistis*) यहूदी लोगों को वचन ''सौंपा गया'' (pisteuo का एक रूप) था, परन्तु वे वचन पर ''विश्वास'' करने में (*pisteuo* का एक रूप) असफल रहे थे। क्या उनका ''विश्वासघात'' (*pistis* का नकारात्मक) परमेश्वर की ''सच्चाई''[14] (*pistis* का एक रूप) को नकारता है? हम शब्दों पर खेल को इस प्रकार व्यक्त कर सकते हैं: ''यहूदियों से उसके वचन के साथ *वफ़ादारी* करने की उम्मीद थी, पर वे *बेवफ़ा* थे।

क्या उनकी *बेवफ़ाई* परमेश्वर की वफ़ा को व्यर्थ कर देती है ?''

LB में इस आपत्ति को इस प्रकार लिखा गया है: ''यह सच है कि उन [यहूदियों] में से कुछ लोग बेवफ़ा थे, पर केवल उनके परमेश्वर के साथ अपनी प्रतिज्ञाओं को तोड़ने का क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर [उनके साथ] अपनी प्रतिज्ञाओं को तोड़ देगा ?'' एक अर्थ में काल्पनिक विरोधी पौलुस से पूछ रहा था, ''क्या तू अपने लोगों के साथ बहुत पुरानी वाचा के लिए परमेश्वर पर बेवफ़ा होने का आरोप लगा रहा है ?''

उत्तर (3:4)

अध्याय 9 से 11 में पौलुस ने इस प्रश्न पर विस्तार से चर्चा की। अभी के लिए उसने इस आशय का उत्तर दिया कि परमेश्वर के लिए बेवफ़ा होना सम्भव नहीं है। उसका उत्तर सख़्त है: ''कदापि नहीं'' (3:4क)। ''कदापि नहीं!'' यूनानी वाक्यांश *me genoito* का मूल अनुवाद है जो ''यूनानी में'' सबसे ज़बर्दस्त सम्भावित नकारात्मक है।[15] पौलुस ने पत्र को भरने वाले जोश का संकेत देते हुए बार-बार इन शब्दों का इस्तेमाल किया (3:6, 31; 6:2, 15; 7:7, 13; 9:14; 11:1, 11)।

हिन्दी शब्दों से *me genoito* वाक्यांश की भावना की गहराई को व्यक्त नहीं किया जा सकता। NIV में ''Not at all!'' है। NKJV में ''Certainly not!'' है। KJV में उस भावना के चरम को दिखाने के प्रयास में जिसे ''अर्धसांसारिक अभिव्यक्ति'' कहा जाता है: ''God forbid.''[16] CJB में ऐसे ही ढंग का इस्तेमाल किया गया है: ''Heaven forbid!'' जिन लोगों को मैं जानता हूं वे इसे इस प्रकार कहेंगे, ''नहीं, नहीं, हज़ार बार नहीं!''[17] पौलुस इस सुझाव से भी कि परमेश्वर बेवफ़ा हो सकता है चौंक जाता था। प्रेरित को इस बात की उतनी चिंता नहीं थी कि लोग *उस* पर विश्वास नहीं करते जितनी इस बात की कि लोग *परमेश्वर* की महिमा करने में नाकाम रहे।

पौलुस ने अपना उत्तर जारी रखा, ''वरन परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे'' (आयत 4ख)। काल्पनिक विरोधी ने वास्तव में पूछा था कि क्या यहूदियों की बेवफ़ाई से परमेश्वर की वफ़ादारी प्रभावित हुई। पौलुस ने उत्तर दिया कि चाहे लोग वे नहीं हैं जो उन्हें होना चाहिए था तौ भी यह परमेश्वर के न बदलने वाले स्वभाव को प्रभावित नहीं करता (2 तीमुथियुस 2:13)। उदाहरण के लिए यदि संसार का हर व्यक्ति झूठा हो, तौ भी परमेश्वर सच्चा ही ठहरेगा (गुडस्पीड)।

इस सच्चाई पर ज़ोर देने पर कि परमेश्वर हमेशा सच्चा ही सिद्ध होगा पौलुस ने भजन संहिता की पुस्तक से उद्धृत किया। ''जिससे तू अपनी बातों में धर्मी ठहरे और न्याय करते समय तू जय पाए'' (आयत 4ग)। यह उद्धरण भजन संहिता 51:4 के अन्तिम भाग से लिया गया है। इस आयत को पौलुस ने पुराने नियम के अधिकतर संस्करणों में पाए जाने वाले अनुवाद से अलग लिखा है। वह यूनानी पुराने नियम (सप्तत्ति अनुवाद) से उद्धृत कर रहा था। जबकि हमारे अनुवाद इब्रानी से किए गए हैं।

भजन संहिता 51 पुराने नियम के सबसे गम्भीर अंगीकार के वचनों में से एक है। यह बतशेबा के साथ अपने पाप के सम्बन्ध में नातान नबी के साथ सामने के बाद दाऊद के पश्चात्ताप

का विवरण है।[18] आयत 4 में दाऊद के शब्दों से यह पता चलता है कि उसके मुख्य लगाव में से एक यह था कि अन्त में परमेश्वर धर्मी और सच्चा ठहरे। वास्तव में वह प्रभु से कह रहा था, ''मैं अपने पाप को मान रहा हूं *ताकि* न्याय करते समय तू जय पाए।''

अंतिम वाक्यांश ''न्याय करते समय तू जय पाए'' कइयों को अजीब लग सकता है। क्या लोग कभी परमेश्वर का न्याय करते हैं ? हां, वे करते हैं, हर रोज़। मैंने लोगों को यह पूछते हुए कि ''परमेश्वर ने यह क्यों होने दिया ?'' त्योरियां चढ़ाते और सिर मारते हैं। संदेह तो सबसे सचेत मसीही लोगों में भी आ सकते हैं। मोसेस ई. लार्ड ने लिखा है:

> हम उस पर हमें पाप के योग्य बनाने के लिए; परीक्षा में लाने के लिए; किसी दूसरे के पाप के लिए मृत्यु के अधीन होने के लिए; कठिनाई के जीवन के लिए हमें ठहराने के लिए; बड़ी-बड़ी परीक्षाओं में भी पवित्र बने रहने की हमारी आवश्यकता के लिए; भविष्य के बारे में हमें अधिक न बताने के लिए दोष निकालते [आरोप लगाते] हैं।[19]

पौलुस के कहने का अर्थ था कि मनुष्य चाहे परमेश्वर का न्याय करने की कोशिश करे तौभी अन्त में वह जय ही पाएगा। एक दिन सब लोगों को यह मानना पड़ेगा कि वह हर बात में बिल्कुल सच्चा था। अर्थात वह वफ़ादार था। CJB में कहा गया है कि परमेश्वर ''परीक्षा में पड़ने पर जीत जाएगा।''

ऑब्जेक्शनः ''पौलुस तू परमेश्वर की धार्मिकता को कम आंक रहा है!'' (3:5, 6)

ऑब्जेक्शन (3:5)

तीसरी आपत्ति आरम्भ होती है, ''सो यदि हमारा अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता[20] है'' (आयत 5)। ''यदि'' में ''क्योंकि'' का विचार मिलता है। आयत 5 के पहले भाग का अनुवाद '' *क्योंकि* यहूदियों का अधर्म परमेश्वर की धार्मिकता ठहरा देता है। ...'' हो सकता है।

दाऊद के पाप (अधार्मिकता) का एक परिणाम यह था कि परमेश्वर सच्चा (धर्मी) ठहरा था (आयत 4)। इस कारण काल्पनिक विरोधी ने अपनी अगली आपत्ति एक आधार वाक्य से आरम्भ की: यहूदियों की बेवफ़ाई परमेश्वर की वफ़ादारी को घटा नहीं देती, बल्कि परमेश्वर की वफ़ादारी को बढ़ाकर दिखाती है। सबसे पहले तो इसने तुलना के द्वारा दिखाया। जैसे गंदे कपड़े के साथ अभी-अभी धोए गए कपड़े की वास्तविक सफ़ाई को दिखाया जाता है। दूसरा इसने यहूदियों की कमियों के बावजूद उनके साथ परमेश्वर की वाचा को सम्मान देने के लिए आगे बताते हुए उसकी करुणा को दिखाने के लिए उन्हें भरपूर अवसर देकर किया। इस तर्क को इस प्रकार कहा जा सकता है, ''हमारे पाप परमेश्वर को और सुन्दर बना देते हैं'' (जैसा SEB में सुझाव दिया गया है)।

यह मानकर कि यहूदियों की अधार्मिकता ने परमेश्वर की धार्मिकता को बढ़ा दिया विरोधी ने आगे कहा, ''तो हम क्या कहें ?'' (आयत 5ख) या ''हम किस निष्कर्ष पर पहुंचे ?'' ''क्या यह कि परमेश्वर जो क्रोध करता है अन्यायी है ?'' (आयत 5ग)। मैं उस विचार को विस्तार देता हूं: ''पौलुस तू ने परमेश्वर के क्रोध की बात की है [देखें 1:18; 2:5, 8]; परन्तु यदि परमेश्वर ने हम

यहूदियों पर क्रोध करना होता (जैसे वह अन्यजातियों पर करता है), तो वह हमारे साथ अपनी प्रतिज्ञाएं पूरी करने में नाकाम होता। यह बात उसे अधर्मी बना देगी और निश्चय ही वह अधर्मी नहीं है। परमेश्वर के लिए हमें दण्ड देना उचित नहीं होगा!'' यहूदी लोग इस विचार से बड़ी दृढ़ता से चिपके हुए थे कि चाहे कितने भी पापी क्यों न हों, वे परमेश्वर की वाचा के लोग ही रहेंगे। जिस कारण उनका मानना था कि परमेश्वर अन्त में उन्हें बचा ही लेगा, चाहे उन्होंने कितनी भी दुष्टता से व्यवहार क्यों न किया हो।

उत्तर (3:5, 6)

यहूदियों के साथ बात करते हुए पौलुस सम्भवतया इस वास्तविक आपत्ति को पहले झेल चुका था, पर यह बोलना उसके लिए अभी भी परेशानी वाली बात थी। उसने बचाव में व्याख्या करते हुए उत्तर दिया: ''(यह तो मैं मनुष्य की रीति पर कहता हूं)'' (3:5घ)। यानी, ''मैं तुम्हें दिखा रहा हूं कि अपने आप को उचित ठहराने की कोशिश करते समय मनुष्य कितने गलत हो सकते हैं!'' फिर उसने इस फुसलाहट पर कि परमेश्वर अधर्मी हो सकता है, ज़बर्दस्त वाक्यांश ''कदापि नहीं!'' से प्रतिक्रिया दी (आयत 6क)।

फिर उसने इस रूखे खंडन के साथ आगे कहा ''नहीं तो परमेश्वर कैसे जगत का न्याय करेगा?'' (आयत 6ख)। इन शब्दों में (1) एक स्पष्ट अर्थ और (2) एक इतना-स्पष्ट-नहीं अर्थ है। ऊपरी तौर पर पौलुस यूं कह रहा था कि ''यदि परमेश्वर अधर्मी है, तो वह संसार का न्याय करने के अयोग्य है। क्योंकि तुम लोग इस बात को मानते हो कि वह संसार का न्याय करेगा,[21] इसलिए तुम्हें यह मानना होगा कि वह धर्मी है।''

परन्तु पौलुस इससे कहीं अधिक कह रहा था। वह इस तर्क का उत्तर दे रहा था कि यहूदी लोगों की धार्मिकता ने परमेश्वर की धार्मिकता को बढ़ा दिया और परमेश्वर के लिए यहूदियों को उसके लिए जिसने ''उसे सुन्दर बनाया'' दण्ड देना अनुचित होता। पौलुस के कहने का अर्थ यह था कि ''इस तर्क को सामान्य अर्थ में संसार पर लागू करें। तुम मानते हो कि अन्यजाति लोग तुम से अधिक अधर्मी हैं।[22] यदि अधार्मिकता परमेश्वर की धार्मिकता को बढ़ाती है, तो अन्यजातियों की अधिक अधार्मिकता तुम्हारी अधार्मिकता से कहीं अधिक परमेश्वर की धार्मिकता को बढ़ाती होनी चाहिए। उसके लिए अन्यजातियों का न्याय करना इससे भी दोगुना गलत होगा। तुम्हारे तर्क के अनुसार परमेश्वर *किसी का* न्याय नहीं कर सकता। तुम ने उसे जगत का न्यायी होने के अयोग्य ठहरा दिया है!''

पौलुस के उत्तर पर विचार करने के बाद हम यहूदी आपत्ति को देखकर यह कहने की परीक्षा में पड़ सकते हैं कि ''यह तो मूर्खतापूर्ण तर्क था! कोई इतना बेतुका कैसे हो सकता है?'' आप जीवन की बहुत सी बातों की गणना नहीं कर सकते, पर आप इतना ज़रूर याद रख सकते हैं कि जब लोग गलत होते हैं तो वे बेतुकी व्याख्याओं के साथ अपने आपको सही ठहराने की कोशिश करते हैं।[23] आदम ने परमेश्वर से कहा था, ''जिस स्त्री को *तू ने* मेरे संग रहने को दिया है उसी ने उस वृक्ष का फल मुझे दिया, और मैंने खाया'' (उत्पत्ति 3:12)। एक छोटा बच्चा प्लेट तोड़ देता है, और कुत्ते की ओर इशारा करते हुए कहता है जैसे ''*उसने* किया'' हो। एक युवा नये फैशन के साथ चलने को उतावला/उतावली है, अपने माता-पिता से कहता/कहती है, ''पर *सब* ऐसे ही

करते हैं!'' अपने विवाहोत्तर सम्बन्ध को उचित ठहराने की कोशिश करते हुए एक विवाहित व्यक्ति दुखी होकर कहता है ''मेरी पत्नी मुझे समझती नहीं है!'' जैसा किसी ने कहा है, मन फिराने की अपेक्षा तर्क देना आसान है।[24] लियोन मौरिस ने लिखा है, ''अपने आप को सही ठहराने की कोशिश में हम पापी लोग अविश्वसनीय चतुराई दिखाते हैं।''[25]

ऑब्जेक्शनः ''पौलुस, परमेश्वर की महिमा की तुझे समझ नहीं है!'' (3:7, 8)

आपत्ति (3:7)

यह हमें शायद चौथी आपत्ति तक ले आता है। आयत 7 में पौलुस ने कहा, ''यदि मेरे झूठ के कारण परमेश्वर की सच्चाई उसकी महिमा के लिए अधिकता से प्रकट हुई, तो फिर क्यों पापी की नाईं मैं दण्ड के योग्य ठहराया जाता हूं?''

कई लोग यह ध्यान देते हैं कि आयत 7 में पौलुस ने ''मेरे झूठ'' कहा और ''मैं'' शब्द का इस्तेमाल किया। वे यह सुझाव देते हैं कि पौलुस ने केवल तीन आपत्तियां बताईं और फिर आयत 7 में अपने विरोधी का तर्क अपने ऊपर लागू किया। उनकी व्याख्या के अनुसार इस आयत में पौलुस कुछ इस प्रकार कह रहा थाः ''तुम कहते हो कि तुम्हारे पापों ने परमेश्वर की महिमा को बढ़ा दिया है,'' इसलिए उसे तुम्हारा न्याय नहीं करना चाहिए, परन्तु इसके साथ ही तुम मुझे झूठा कहते हो। यदि तुम्हारा तर्क सही है तो मेरा कथित झूठ भी परमेश्वर की महिमा को बढ़ा देता है। यदि ऐसा है तो यह मुझ पर पापी होने के तुम्हारे आरोप से मेल नहीं खाता!

यह व्याख्या निश्चय ही सम्भव है और वचन के साथ कोई अन्याय नहीं करती, परन्तु ''झूठ'' शब्द के बारे में मुझे लगता है कि काल्पनिक विरोधी आयत 4 में पौलुस के हर किसी (संदर्भ में, हर यहूदी) के पौलुस के आरोप की बात कर रहा था। पौलुस के उत्तम पुरुष के इस्तेमाल के बारे में आम तौर पर वह ऐसा अपने पाठकों के परिचय के लिए करता था।[26] मुझे लगता है कि पौलुस आयत 7 में चौथे आरोप की बात कर रहा था, जो अभी बताए आरोप की तरह ही था (देखें NIV; AB; CEV; NLT)। यहूदी विरोधी सम्भवतया यह बहस कर रहा था, ''यदि हमारा झूठ बोलना परमेश्वर की सच्चाई को बढ़ा देता है और इस तरह अन्ततः परमेश्वर की महिमा में जोड़ता है, तो तू [पौलुस] यह ज़ोर क्यों देता है कि हम यहूदी पापी हैं?''

उत्तर (3:8)

पौलुस का बुनियादी उत्तर यह था कि यदि 5 और 7 आयतों जैसे तर्कों को इसके तर्कसंगत निष्कर्ष तक पहुंचा दिया जाए तो यही निष्कर्ष निकलेगा कि पाप करना *अच्छा* है क्योंकि अन्त में ''पाप परमेश्वर को अच्छा दिखाता है।'' आयत 8क-ग में, पौलुस ने इसे इस प्रकार कहा, ''हम क्यों बुराई न करें, कि भलाई निकले? ... 'इनका यही कहना है?' '' इस प्रकार तर्क व्यक्त करने पर किसी को भी पराजित होना चाहिए। बुराई अच्छी *कभी* नहीं होती और पाप की सराहना *कभी* नहीं होती।

क्या कोई सचमुच यह बहस करेगा, ''आओ बुराई करें ताकि भलाई निकले?'' लोग हमेशा

ऐसा ही करते हैं! वे इन संक्षिप्त शब्दों का इस्तेमाल नहीं करते परन्तु अन्दरखाते उनकी फिलॉस्फी यही है।[27] मेरे यह लिखने के समय, ओक्लाहोमा का गवर्नर लोगों से राज्य में ''हमारे स्कूलों के लिए फंड इकट्ठा करने के लिए'' कानूनी जुए को बढ़ावा देने का आग्रह कर रहा था। इन भाषणों को सुनकर मेरे मन में आयत 8 के शब्द आते हैं, ''आओ बुराई करें ताकि भलाई निकले।''

''आओ बुराई करें ताकि भलाई निकले'' बहुत पुरानी फिलॉस्फी है: ''जैसे भी हो मंज़िल पा लो।'' बहुतों का मानना है कि यदि परिणाम सही है तो मंज़िल पाने के लिए कोई भी तरीका गलत नहीं है। एक युवक नकल करने को इसलिए उचित ठहरा सकता है क्योंकि ''तरीका'' (बेईमानी) अच्छा न होने के बावजूद ''मंज़िल'' (ग्रेजुएशन) उसकी इच्छा है। कोई कर्मचारी दूसरों पर आरोप लगाकर अपनी गलतियों का आरोप दूसरे पर मढ़ने की कोशिश कर सकता है क्योंकि तरीका ''झूठ बोलना'' गलत होने के बावजूद ''मंज़िल'' (नौकरी पर बने रहना) उसके लिए महत्वपूर्ण है। केवल प्रभु ही जानता है कि इतने बुरे कामों ने किस शैतानी फिलॉसफी को बढ़ावा दिया है।

आयत 8 के पहले भाग में पौलुस ने एक कोष्ठक वाक्यांश जोड़ा: ''(जैसा हम पर यही दोष लगाया भी जाता है)'' (आयत 8ख)। सम्भवतया ''संपादकीय हम'' कहे जाने की तरह ''हम'' केवल पौलुस को कहा गया है। वह अपने शत्रुओं पर *उस पर* और उसकी शिक्षा पर दोष लगाने की बात कर रहा था। स्पष्टतया उनका यह दावा था कि *वह* यह सिखाता था कि ''आओ बुराई करें ताकि भलाई निकले।'' यह पौलुस की अनुग्रह पर शिक्षा की बात हो सकती है। 5:20 में उसने कहा कि ''जहां पाप बहुत हुआ वहां अनुग्रह उससे भी कहीं अधिक हुआ।'' पौलुस के आलोचकों ने इसे यह सिखाने के लिए घुमा लिया कि ''जितना अधिक हम पाप करते हैं उतना ही हम पर अनुग्रह होता है, सो हमें जितना हो सके पाप करना चाहिए!'' (देखें 2 पतरस 3:16ख)। 6:1, 2 में पौलुस ने उस दोष लगाने वाली गलत शिक्षा की बात की है।

पौलुस को नहीं लगता था कि ''आओ बुराई करें ताकि भलाई निकले'' की फिलॉस्फी का खण्डन किया जाना आवश्यक है। इसके बजाय उसने इस संक्षिप्त परन्तु ज़बर्दस्त वाक्य के साथ निष्कर्ष निकाला: ''ऐसों का दोषी ठहराना ठीक है'' (3:8घ)। मूल धर्मशास्त्र में मूलतया ''जिनका न्याय होना सही है'' है।[28] यह अस्पष्ट है कि ''ऐसों का'' उन्हीं के लिए कहा गया है जिन्होंने कहा ''आओ बुराई करें ताकि भलाई निकले,'' इस बात को ही या पौलुस को गलत पेश करने वालों (अनुवादों की तुलना करें) को। पौलुस के मन में इनमें से चाहे जो भी हो, परन्तु ज़ोर ''ठीक'' शब्द पर था। यहूदी लोग जो चाहे बहस कर सकते थे, परन्तु अन्त में वे पापी ही थे। इसलिए उनको परमेश्वर की ओर से दोषी ठहराना गलत नहीं, बल्कि ''सही'' था।

सारांश

हमारा वचन पाठ छोटा है पर यह उन बातों से भरा पड़ा है जो हमारे मनों से बात करती हैं। उदाहरण के लिए जॉन कैल्विन का मानना था कि आयत 4 में पौलुस के शब्द ''परमेश्वर सच्चा और हर एक मनुष्य झूठा ठहरे'' (KJV) ''हर मसीही फिलॉसफी की मुख्य कहावत'' थी।[29] जेम्स आर. एडवर्ड्स ने लिखा है कि इस वाक्य में ''सब झूठों को सच्चाई के दण्ड'' की बात है, परन्तु ''स्वतन्त्र करने वाली आशा है कि परमेश्वर सच्चा है।''[30] जब लोग झूठे हों तब भी परमेश्वर

सच्चा है। परमेश्वर पर तब भी भरोसा किया जा सकता है, जब लोग भरोसे के योग्य न हों। परमेश्वर पर तब भी भरोसा किया जा सकता है जब लोगों पर भरोसा न किया जा सकता हो। लोग आपको पीठ दिखा सकते हैं पर परमेश्वर कभी आपको नीचे नहीं गिरने देगा।

अन्य महत्वपूर्ण सच्चाइयां हमारे वचन पाठ से ली जा सकती थीं परन्तु समापन करते हुए मैं एक तथ्य पर ज़ोर देना चाहता हूं: पौलुस ने हर आपत्ति का जो यहूदी लोग उठा सकते थे उत्तर दिया। अदालतों में कई बार बचाव पक्ष के वकील ''आई ऑब्जेक्ट!'' शब्दों के साथ कार्यवाही में रुकावट डालते हैं और फिर आपत्ति करने के अपने कारण बताते हैं।[31] यदि जज को लगे कि आपत्ति जायज़ है तो वह कहता है, ''ऑब्जेक्शन सस्टेन्ड।'' यदि उसे सही न लगे तो वह कहता है, ''ऑब्जेक्शन ओवररूल्ड।'' यहूदी आपत्तियों के सम्बन्ध में, हर मामले में परमेश्वर की प्रेरणा से दिया गया उत्तर था ''ऑब्जेक्शन ओवररूल्ड!'' यहूदियों का तर्क चाहे कोई भी क्यों न हो, वे पापी ही थे जिन्हें उद्धार की आवश्यकता थी!

यदि आपने भरोसा रखने वाली आज्ञाकारिता में परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण नहीं किया है (यूहन्ना 14:15; मरकुस 16:16; रोमियों 6:3-6), तो मैं आपसे साफ़-साफ़ कहता हूं कि आप जितनी चाहे बहस कर लें पर इस तथ्य को बदलने के लिए कि आप *खोए* हुए हैं कुछ नहीं कह सकते। यदि आपकी आत्मिक स्थिति यही है तो मेरी आपसे विनती है कि अपने तर्कों को छोड़ अपने आप को परमेश्वर की इच्छा के आगे सौंप दें!

सिखाने वालों तथा प्रचारकों के लिए नोट्स

इस पाठ का एक और शीर्षक ''ऑब्जेक्शन ओवररूल्ड'' हो सकता है। जॉन मैकआर्थर ने आपत्तियों की सूची में (तीन और चार आपत्तियों को मिलाते हुए) अनुप्रास (एक ही अक्षर या स्वर से आरम्भ होने वाला शब्द) का इस्तेमाल किया है: ''आप परमेश्वर के लोगों पर हमला करके'' (आयतें 1, 2); ''आप परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं पर हमला कर रहे हैं'' (आयतें 3, 4); ''आप परमेश्वर की शुद्धता पर हमला कर रहे हैं'' (आयतें 5-8)।[32]

वचन पाठ से आप और व्यावहारिक प्रासंगिकता बनाना चाहे तो बना सकते हैं। उदाहरण के लिए आप इस बात पर ज़ोर दे सकते हैं कि इन यहूदियों की तरह ही हमें भी परमेश्वर के वचन सौंपे गए हैं (देखें यहूदा 3)। हम वचन के ''प्रबन्धक'' हैं (देखें 2 तीमुथियुस 2:2) और हमें अपने भरोसे पर खरे उतरना आवश्यक है। इस तथ्य को समझाने को कि पौलुस की तरह हमें भी अपने विश्वास के कारण से जुड़ी आपत्तियों का उत्तर देना आवश्यक है, इस वचन का इस्तेमाल भी कर सकते हैं (देखें 1 पतरस 3:15)।

टिप्पणियां

[1]अगला भाग 3:9-20 स्वभाव में अधिक सामान्य है (आयतें 9, 19) परन्तु फिर भी यहूदियों पर विशेष ध्यान

देता है (आयतें 9क, 19क, 20क)। [2]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* द NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 103. [3]इस पाठ में मेरे शीर्षक जॉन. आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 95-97 से प्रभावित थे। [4]*दि एनेलिटकल ग्रीक लेक्सिकन* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1971), 317. [5]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 15. [6]जॉन मैकआर्थर, *रोमन्स 1-8,* दि मैकआर्थर न्यू टैस्टामेंट कमैंट्री (शिकागो: मूडी प्रैस, 1991), 168; लियोन मौरिस, *द एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 153. [7]मैकआर्थर, 169. [8]जेम्स आर. एडवर्ड्स, *रोमन्स,* न्यू इंटरनैशनल बिब्लिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1992), 83. [9]जेम्स डी. स्मार्ट, *डोरवे टू ए न्यू एज* (न्यू यॉर्क: पृष्ठ नहीं, 1972); मौरिस, 153, n. 7 में उद्धृत। [10]जहां आप रहते हैं वहां ''तेज़, शक्तिशाली रौशनी'' की बात करें। यह बड़ी फ्लैशलाइट या टॉर्च हो सकती है।

[11]*दि एनेलिटिकल ग्रीक लेक्सिकन,* 314. [12]एडवर्ड्स, 83. [13]अनुवादित शब्द ''व्यर्थ'' यूनानी शब्द (*katargeo*) का मिश्रित शब्द है। काम के लिए शब्द (*ergon*) (*a*) से नकारात्मक हो जाता है और *kata* के साथ गहरा जाता है। इसका मूल अर्थ ''काम न करने का कारण बनना,'' निष्क्रिय होना है। (मौरिस, 155, n. 17.) [14]पहले एक शब्द अध्ययन में हमने देखा था कि *pistis* ''विश्वास'' का अनुवाद कई बार ''विश्वास योग्य'' विश्वास से भरा के रूप में होता है। [15]एडवर्ड्स, 88. [16]''परमेश्वर'' के लिए यूनानी शब्द यूनानी धर्मशास्त्र में नहीं मिलता। दस आज्ञाओं के साथ बड़ा होने वाले के रूप में पौलुस के लिए इस प्रकार की अभिव्यक्ति में परमेश्वर के नाम का इस्तेमाल करना नहीं होगा। [17]जहां आप रहते हैं वहां भी ऐसी ही अभिव्यक्ति होगी। [18]प्राचीन हस्तलेखों में भजन संहिता 51 के लिए यह शीर्षक है: ''दाऊद का भजन, जब नातान नबी उसके पास इसलिए आया कि वह बतशेब्बा के पास गया था।'' यह कहानी 2 शमुएल 12:1-15 में मिलती है। [19]मोसेस ई. लार्ड, *कमैंट्री ऑन पॉल'स लैटर टू रोमन्स* (लेक्सिंग्टन, कैंटकी: पृष्ठ नहीं, 1875; रिप्रिंट, डिलाइट, आरकैंसा: गॉस्पल लाइट पब्लिशिंग कं., तिथि नहीं), 103. [20]अनुवादित शब्द ''ठहरा देता है'' (*sunistemi* से) एक मिश्रित शब्द (*sun* [''के साथ''] जमा *istemi* [''रखना'']) जिसका इस्तेमाल एक व्यक्ति द्वारा दूसरे का परिचय कराने के लिए (''साथ रखना'') उसके पक्ष में बोलते हुए रखा जाता था। AB में ''our unrighteousness ... establishes and exhibits the righteousness of God'' है।

[21]देखें उत्पत्ति 18:25. [22]देखें 2:1. [23]ऐसे उदाहरण का इस्तेमाल करें जिसे आपके सुनने वाले समझ सकते हैं। [24]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमैन, एण्ड नील विलसन, *रोमन्स,* लाइफ एपलीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 63 से लिया गया। [25]मौरिस, 161. [26]वही, 157-58. [27]इस और अगले पद्य के सम्बन्ध में ऐसे उदहारणों का इस्तेमाल करें जिन्हें आपके सुनने वाले समझ सकते हैं। [28]*दि इंटरलीनर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट: दि नेसले ग्रीक टैक्सट विद ए न्यू लिटरल इंग्लिश ट्रांसलेशन बाय एलफर्ड मार्शल* (लंदन: शमूएल बैगस्टर एण्ड सन्स, 1958), 610. [29]जॉन कैलविन, *दि एपिस्टल ऑफ़ पॉल द एपोस्टल टू द रोमन्स,* अनु. व सं. जॉन ओवल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1948), 116. [30]एडवर्ड्स, 85.

[31]अपने देश की अदालत की कार्यवाहियों के लिए आवश्यकता के अनुसार चुनें। [32]मैकार्थर, 166, 170, 172.